

ASHA ARCHIVES

1.295

511

मंसनधायुत्रश्रात्रभिः
क्रामत्रवृद्धविगस्यः
यागोकिबष्टनृयाभि
धामया॥ॐ भिनाभिगस
चिगजगुसंगमनगायु
नासादिवमृत्यगकिशो
पवेननृविष्टजंकिधी
यानवेजनासात्रमृगस
रुजक॥ॐ उयद्रवगि
चीना०संगमचनदीना
धियाविष्टात्रजायग॥
रूप्यासागयात्यन०वि
ष्टुनाविष्टग०क०नि
भिगसुर्वदवेष्टयात्र
रुन्यनभासुग॥ॐ दग
निदिययुष्यानिस्तय
यग॥मध्याध्यागयच
क्रन्दोनिस्तययग॥मू

लमकुदगिधनिर्मग
॥मध्याध्यागयचक
नस्तययग॥वाक्का॥शी
गत्रुतनाचयेधरुलान
कस्तययामि॥ॐ स्वस्ति
३॥ॐ स्वस्तिनामिमीनः
त्यादि॥॥ॐ कुनिक्रया
दि॥११॥ॐ ओ०३०४मि
००नवित्या॥१॥ॐ रुद्रा
यनवित्यादि॥१॥ॐ सह
सुभीष्टत्यादि॥१॥ॐ विः
जाष्टरुहत्विवत्विद्यादि॥१॥
ॐ नमस्तुत्रुदमन्याद्यादि
॥१॥ॐ वर००सामवगन
त्यादि॥५॥ॐ गुप्तकंठ
त्यादि॥५॥ॐ ग्रायवर्जम
त्यादि॥१॥ॐ मित्रानामाः
भीत्यादि॥१॥ॐ स्वस्तिन

ॐ नमः ॥ ॐ यय ४ ययि
शा ॥ ॐ विश्वं न नाटम ॥
ॐ अग्निर्द्वेना ॥ ॐ शो
४४॥ कि ॥ यक्ष्मन्तना
नी ॥ ॐ यय ४ ययि ॥
ॐ दधिक्राया ॥ ॐ न जा
सि ॥ ॐ मधु वाना ॥ ॐ :
नम ४४ म्वायच ॥ ॐ न ४
४४ दकननाया ॥ दवनि
वसिजलधवा ॥ कृत्वा जलं
नयन ॥ ॐ न ४४ शिवा दकन
स्नानी ॥ ॐ ययि ४४ ॥ यः
लाम्बवददवा ४४ जलं स
४४ ॥ चन्दनगिलकः
कावशन ॥ ॐ यय ४४ गचा ॥
सिन्दूरी ॥ ॐ स्वस्ति विष्टः
दा ॥ अक्षन्मीम ॥ ययि ॥
ॐ आरु लिनी ॥ ने वद्वी ॥ ॐ

अनयन ॥ स्वस्ति ४ ययि
४४ स्वस्ति ॥ ॐ न ४ ययि
वक्त्रे ॥ ॐ न स्वस्ति चम्य
४४ गन्तुना नाय ४४ स्वस्ति
वकस्य निहययुजा कृत्वा
४४ स्वस्ति या धनिम ४॥ ॐ
अक्ष ॥ ॐ नमस्काव
या ४४ यामनास ४॥ ॐ रवा
ययान् ४४ ॥ ॐ नमस्विष्ट
॥ ॐ नमस्विष्ट ४४ ॥ ॐ
वा ४४ ॥ नत्वा जामी योदि
॥ १२ ॥ वासुदवमस्वा ४४
विका ॥ ॐ नमस्विष्ट ४४
स्वमावि ४४ कर्ण ४४ नमः ४४
४४ ययि ४४ ॥ ॐ नमस्काव
४४ कि कमलास नाय नमः ४॥
अनकास नाय ४॥ नालास
नाय ४॥ ययि ४४ नाय ४॥ क
ययि ४४ नाय नमः ४॥

म बा म नाय श क ह्नि का स
 नाय श ग नु उ म नाय श
 ध्वा न ॥ जू छे वा ड् न ध न द
 व ल ड्नी वा मा जे स ह्नि न
 ॥ उ कि म् कि यु द द वः
 न मा मि स न न ह वि ॥ ड्नी
 स ४ न मा ना वा य ध्वा य वि
 ध्वा स न ड्नी स ४ स्वा हा ॥
 ३ ॥ य उ जे ॥ क ध्वा वा य ध्वा
 स हि ना य न म ४ ॥ ना वा
 य ध्वा य वा १ ॥ ध्वा वा स हि
 ना य श ॥ मा ध्वा वा य का नि
 स हि ना य श ॥ ८ ग वि नाः
 य क्रिया स हि ना य श ॥ वि
 ध्वा व ध्वा नि स हि ना य श ॥
 म ध्वा सु द ना य ध्वा नि स
 हि ना य श ॥ नि वि क्र मा य

०० क्वा स हि ना य श ॥ वा म ना
 य ध्वा नि स हि ना य श ॥ ध्वा ध्वा
 वा य न नि नि स हि ना य श ॥
 द्वा ध्वा क ध्वा य मा य स हि ना
 य श ॥ य द्वा ना रा य ध्वा स हि
 ना य श ॥ दा मा द वा य म हि
 स हि ना य न मः ॥ ध्वा य न
 ध्वा ल मा य ल ड्नी स हि ना
 य श ॥ श्वा ध्वा न ध्वा कि मै के
 ला स ना य ध्वा दि ॥ वि नी न य २
 मे ध्वा ना य न म ४ ॥ नु व जः
 वे ना च नी य ध्वा ड्नी रु द्वा
 ॥ २ ॥ ड्नी द्वा य ध्वा दि ॥ श्वा
 वा रु न स्था य न च न्द ना य
 न य ध्वा न म ४ ॥ ८ ध्वा नु श्वा
 नि ध्वा य च क ग ण यः
 ध्वा ध्वा व स्स ग नु उ म ड्नी

यदभ्यस्यन् ॥ यनः वयाव
 न ॥ ॐ यः न मन उ नय
 न विद्या विद्या विद्या
 वृद्धा विद्या विद्या विद्या
 गाय ॥ वयः ना विदकः
 यि नमहीद वस्य स विदुः
 यजि सु नि ॥ ॐ ॐ दं वि
 द् विच कु म गु धा नि द ॥
 यदम् । स मूरु मस्य या ०
 स न स्वाहा ॥ ॐ ॐ नावनी
 ॥ न मनी हि रु न ० स्य
 वसिनी मन वेद भ स्या न ॥
 ॐ वा सु भ्रा वा द सी विष्णु वे
 न दा ध र्थ य धि वी म रि नी
 मय्य ० ॥ स्वाहा ॥ ॐ वेद भूः
 गो द वे द्या धार व ० न या चो ध
 न म ध व क ल्य य नी उ द्य
 न नय न म्ना नि क न न म् ।

स्वः गमस्मावद नंदवा इह
 न्याय म्मानिवादिष्ट प्रजा
 मानिवादिष्ट मग्न नमर्षा
 वष्म नम्य थिवा ४॥ उं वि
 प्रो ह्नु के वी शो न्निपु वार्त्तः
 स ४ यार्थि वानि विममनः
 नजा ० सि। या नृस्करण्य
 इह न ० सध स्तुं विचक्र
 माह स्तुं (धन) गम या विष्म
 वत्वा ॥ १॥ उं दिवा वा विष्म
 उ न द्वाय थि शो म हा वा
 विष्म उ वा न न विधाना
 उला हि रु स्ता व स नाये
 दसाय स स्त द दि द्वादाः
 नशा विष्म वत्वा ॥ ३॥ उं य
 न विष्म स्त व न वी शो दाम्
 धन न री म ४ कृच ना गि वि
 स्ता ४ य स्ता नृ य्नि य् विव

[illegible]

सुखा॥१॥स्यराधेतिगन्मादिवाक्कुसुम॥३॥

नमोस्तु नमोस्तु ॥ ज्ञान
दयि ॥ यन् ॥ चामर्ष
लक्षण ॥ ॐ विष्णु नमो
मसि ॥ ॐ श्री गुरु ॥ ॐ या
वकान ॥ सनस्य एवञ्ज
वो जिर्न वसु ॥ धिया विया ॥
ज्जायन् ॥ मधु लय
यन् ॥ ॐ सुयुक्त ॥
यार्जन्य ॥ आदिबो ह्मा
दर्विद्या न वायववृहः
स्य नथ वाचस्य नथ य
ज्ञाशालज्ञा नुविः
द्रु ॥ य्वामर्षु मत्स्या
नदीय नथ या वायु थि
वीय ॥ कर्म ॥ भंखाद
कजा मथन् ॥ भंखाम

श्रीरुद्र नारायण मिश्रक
 मवायवि। दहल गमः
 नृश्री वक्रद ह्या वः
 धारुणि॥ पुनः न्यासं कः
 स्वावादि गङ्गा नृ॥ चतुः
 दिक् पूजा॥ कुमारगः
 रमणीया देवता पूजा॥
 स्नानचन्दनपुष्पविष्णु
 य॥ हौं हौं सः सदा शिवा
 यनमः॥ शिवपूजा॥ नै
 वदवदवाद्यादिनिष्कारा
 ॥ सनखनीयूजा॥ १॥ सखा
 हा॥ गङ्गायूजा॥ यमिः
 वायव्यश॥ नैऋत्यवन्त्र
 माधविमलवक्राधीवि
 त्रयाङ्का॥ नवमाहम्

[illegible]

लेन्दुवदनत्यादि॥७॥
मायनयदक्षिणगुणं॥
ॐ हेमं शुभाय प्रयुषः ४ स
हस्राक्षः ४ सहस्रयान्। सरस्व
मि० सर्वगतस्यास्त्वोत्पत्ति
वदभाङ्गुलम्॥१॥ ॐ यन्
बन्वद० सर्वथा हनन्त्या
वृणवाग्म। उनाम नत्वः
स्यभा नाचद न नानि प्राह
नि॥२॥ नगावानस्य महि
मानाङ्गायां श्वयन्वयः ४।
यादास्य विष्णुखरगानिः
रुयादस्यामृत् न दिवि॥३॥
॥ गियाद्द्वन्द्व उदेत्यन्वयः ४
यादास्य हारवत्युनः ४ न

ना विष्णु काम सा भना
नम न नरि॥४॥ न नाः
विना उक्राय न विना जात्र
धियन्वयः ४। सजा नो न
त्यविद्य नय श्वदु मिम
त्ययन्वयः ४॥५॥ नस्माद्यः
द्रात्सर्वज्ञ न ४ संहर्तय
बदा क्रमाय श्वत्सु श्वक
वायवा नो बध्य ग्राम्या
श्वयः॥६॥ नस्माद्यद्रासि
वज्ञ न जच ४ सोमानिय
द्विष। कुन्दांसि च द्विष ४
नस्माद्यद्रासु स्मादज्ञान
॥७॥ नस्मादध्वं नृजाय
न श्वक वारुणादन ४।
गावा हज द्विष नस्मात्

७
४

स्माज्ञाना नृजा वृत्त ४॥६॥
तं यत्तु बहि विषोक्त यत्तु
यं ज्ञानमगुन ४। तं न देवा
अयत्तु न सा अजययः
अथ ॥१०॥ यत्तु नृष्यं यद
५४ कनि अय कल्यय
न। म् सर्व किमस्यासीति
वोक्त किम्व्यादा उच्य
त ॥१०॥ वोक्त ८॥ स्यम्
खमासी दा क्त्वा ज न्य ४
कन ४ उच्य न दस्यय द्वे
अथ ४ यत्तु ५४ ५४ दो अज्ञा
यन ॥११॥ च न्द मा मून सा
जान अक्ष ४ सु अज्ञा अज्ञा
यन ॥११॥ अज्ञा दो अथ अ
४ अथ अथाद नि यज्ञा य
न ॥१२॥ नास्या अज्ञा सीदक

निरु ० अक्षो ४ समवर्त
न। यत्तु अक्षि मिदि ४ अ
गुन अक्षो काश् अ कल्य
यन ॥१३॥ यत्तु नृष्यं नः
ह विषाद वा यत्तु मग न्व
न। वसनीत्यासीदा अज्ञा
अथ ४ अथ ४ अथ वि ४॥
१४॥ सफा त्या सं य मिध
यत्तु ४ सफ स मिध ४ क
न ४। द वा यत्तु न न्वाना
अव अक्ष यत्तु यत्तु
म् ॥१५॥ यत्तु न अक्ष मय
जेन द वा त्या निध अक्ष नि
यथ मा न्या सन्। नह ना
कं म हि मान ४ सच नय
यत्तु अक्ष ४ सकि द
वी ४॥१६॥ अक्ष ४ सक्ष

न ४ य वि श्वे न सा च विः
 भव कर्म ४ सु न वे र्क नः
 ८१। न स्य त्व सौ वि दे ध
 द्रु य म नि न न म ल स्य द
 व त्व मा जा न म ८१॥ १॥
 व दारु म न य न् न र्भ म हा
 क मा दि त्व व र्णु न म स ४ः
 य न स्या न्। न भे व वि दि
 त्वा नि मृ स्य म नि ना न्य ४
 य त्वा वि द्य न स्य ना च ॥ १
 ८॥ यु जा य नि म्भ व नि गः
 ग र्ह न् न व जा य मा नाः
 व र्क ५ वि जा य न। न स्य
 आ नि य वि य म्भ नि धी
 वा सु स्मि न् न ग र्क र्णु वः
 ना नि वि म्भ ॥ १९॥ सा द
 व स्य न्ना न य नि सा द वा

ना य्वा दि न ४। य र्वा सा द
 व स्या जा ना न मा न्वा चः
 वा क्र य ॥ २०॥ न र्च वा क्रः
 ज न च ना द वा २८॥ न द
 व व न्॥ य स्ये वा क्र ८६॥
 वि द्या रु स्य द वा न् स त्व
 ८७॥ २१॥ म्भ म ल क्ष्मी
 म्भ य त्वा व हा ना गु या ८७
 न द्वा ना नि न्द्र य म जि नो
 वा रु मा। ९०॥ नि वा धा
 म्भ ९०॥ वा धा स व लो क
 मे ९०॥ वा धा ॥ २२॥ च न्द न
 य्वा उ ले र्ग र्क उं स स्ना
 य ॥ न्ना व म्भ न्ना स र्कः
 स्वा य द म्भ ॥ ९७॥ द व
 म्भ म न्द्र प्रा य ॥ व हि र्ग

ॐ॥ वृनिष्ठा ग वृत्तनाः
वायव्यनिष्ठयुजोयव
मि॥ ७ ॥ सं०-८॥ ७३॥

ॐ वसवस्त्वा ध्वययनुः
अयं न च नदसां गिन
स्ववृदास्त्वा ध्वययनुः
दुरा न च नदसां गिन
दादित्वास्त्वा ध्वययनुः
ग न न च नदसां गिन
द्विच्छत्वा दवा वृक्षानः
वा ध्वययत्वा नृक्षे न
च नदसां गिन
ध्वययनुवृक्षान्
ययविष्णुस्त्वा ध्वययनु
॥ ध्वयया वद ॥ ७ ॥

ॐ नमः गुरु वनमाप्रसादी
कविधि॥ द्विगु वृत्तलिलसि
पाय॥ वमृहीले न कएक
याय॥ एजाइ १ पंचापचान
जालना॥ सूर्यका निसमि
याय॥ पठप १ गहसतय
ईत्रगवृक्षपंचनल्लुश
हीमति जावतपुत्रनासाक
अगुरु कर्षन कमुनका
धपले श्रीरवधुत्रक वन्दन
ई ईम थाग निष्ठा वमसादी
पयाचागपुले॥ वथाथ
निवका ८॥ मसादीपलक
न्यायमानया इवलाहा
गिरु ३४ गंथि मसादी

[illegible]

शायनमः॥ ॐ कौं अग्नेय अ
 ना मि काय स्वाहा॥ ॐ हूं अ
 ग्नेय मध्माय वोषट्॥ ॐ
 हूं अग्नेय नङ्ग न्याय हूं॥ ॐ
 कौं अग्नेय अंगु शायनमः॥
 ॐ हूं अग्नेय कृत्तन पृथरु
 त्॥ ॐ कौं अग्नेय हृदयाय
 नमः॥ ॐ कौं अग्नेय सिनधु
 स्वाहा॥ ॐ हूं अग्नेय जि
 रवाय वोषट्॥ ॐ हूं अग्नेय
 कवचाय हूं॥ ॐ कौं अग्नेय
 नग्नघाय वोषट्॥ ॐ हूं अग्ने
 य अम्नाय रुत॥ वक्र न्यास
 ॥ ॐ कौं अग्ने इदं वक्राय न
 मः॥ ॐ कौं अग्नेय सर्ववक्रा
 य नमः॥ ॐ हूं अग्नेय दक्षिण
 वक्राय नमः॥ ॐ हूं अग्नेय

काय नमः॥ पुं ऊँ अग्ने य
क्षि मव काय २॥ पुं ऊँ अग्ने य
पता पत व काय ३॥ जलार्ध
पाशु सजा ॥ हन सुदि ॥ आत्म
सजा ॥ प्रवीदि ००१ ग्नाना नैरा
गि हो रवान सजा ॥ लूँ ००५
यव ऊरु स्नायस्नु नाधिपन
पाइ की ॥ तुं अग्ने य ठा कि
रु स्नाय न जा धि पाय पाइ
की ॥ मुं ज मा द बु रु स्नाय प
पुं विपन य पाइ की ॥ इ
नं ज लाय ख ऊ रु स्नाय ज
ला धिपन य पाइ की ॥ यूं वा
युथी ध ऊ रु स्नाय पव नाधि
प य पाइ की ॥ लूं कु व नाय
गा ऊ रु स्नाय थ नाधिपन य
पाइ की ॥

[illegible]

विद्या न स्वाय नमः ॥ दत्तस
॥ हं निवत् स्वाय न दाय नम
॥ वा सा ॥ धनं धनका वधन
खे दायिता न न वधुपथ
या दाव न य ॥ ने एत विमवि
सु चाय ॥ य ज मा म हा दी या
का ॥ स्वस्ति वा क पी ल प ॥ ॥
स्वस्ति क र्था त्स दा वि द्यु स्व
स्ति मा क र्त्तु म व वा या गि नो
स्वस्ति सर्वा ऽथ स्वस्ति पा णः
अथ क र्त्तु का ॥ घ व व द दि व
प द्वा न र्त्तु न चो द न र्त्तु थ
स्वस्ति पे त्वां ग म हा र्त्तु स्व पा
प्र क ट द व न ॥ ए न वा ए न वा
भी गं स्वस्ति स्व स्वः स्व व
वृ का स्व म न्ता ऽथ स्व म डा
अ स्व पा य धा प नि वा नि न ॥
गु रू द्वा क र्त्तु न सि हा स्वस्ति
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

संस्कृत
ASIAN ARCHIVES

1. 295

सर्वसमस्तया स्वस्ति देवादि
देवर्षिभिरनुना जानि रीतं
॥ इत्यपन्नालि एफा ४४ स्व
स्ति कुलो नि देवता ॥ स्वस्ति
ना जायु जाना च यजमास्तु
स्ति सर्वदा ॥ आचार्य नम
स्तु दीपपद्म ॥ प्रादुर्लभ ॥ पु
वर्द्धि नृपाय विद्महे इण्डास
नाय धामदी गत्री वक्षिष
चोदयाग ॥ मेषास्तनय नम
॥ ध्याना मे पात्र पतिवा
र्षिभिरुक्तं इण्डासनी ॥ क
स्तु चोक्तं नृवक्तु प्रकृता
स्तु तदिनि ॥ सप्तवर्द्धि वक्त
जिह्वा ४४ वा दिदक्षि कर्तु
स्वास्त्यस्तु स्ति नवाम ॥ अ
गर्भे ४४ भक्ति कर्मनि ॥ ध्यान
पश्य नम ॥ पादि स्नान चन्द

नृकृत पृथ्या गतः सर्वोदि
०००० नृगि संपद्य ॥ पुन
कृष्टालिनी नेमः ॥ पुन
माय नमः ॥ पुन का कपिल
नम ॥ पुन का विस्तु निगि
नी ॥ पुन मा लाय रो ॥ पुन
चिक्का कवा नमः ॥ पु
न का य नमः ॥ पुन ओ
अचिगाय नम ॥ गिर्या
जलि ३ ॥ पुन ना नृव मा
वर्द्धि मृक य नमः ॥ व
वलि ३ ॥ आवाहनादि ॥ अ
मृक देवता याम् नन गिर्या
जलि ३ वलि ॥ आवाहना
दि ॥ मृडा ॥ धूप ॥ दीपा ॥ अ
पा ॥ स्नान ॥ श्रीसंवत् ॥ अ
दे सदा ॥ अमृक देवता

प दीप ॥ श्राप ॥ श्री ॥ न
की न क ॥ च न नादि नाशी
बीद ॥ वलि ॥ अय ॥ म
हा दीप विसर्जन साहि
थाय ॥ ०० निमल दीया वि
धि ॥ श्री ॥ ४ नो ॥ १ ध
मी ना जे न लिखि ग समा
फ ॥

नै बं टं कं हं द्यं २ नै पं दी
प पु जाल य स्वा हा वा गु
वै पु थ म वा जं बं टं कं व
त नः प री ॥ हं द्यं यु र्ग मं न
य यु र्ग मं दी प पु जाल य क
था ॥ वि द्धि जां या म हा दी प
म न्त्री आ न प कि नि ना ॥

नाना यन्त्र विद्या हं वा सु द वा य धी म हं न ना विष्णु य चा द या न ॥ नाना यन्त्र स्य
आदि त्या च विद्या हं मा रु द्ध आ य धी म हं न न्नः सूर्या यि चा द या न ॥ सूर्या स्य
सर्व संपदि नो विद्म हं कि ष्ण न्नो धी म हं न न्नः शक्ति यु चा द या न ॥ शक्तिः
त्व न्ना दे वी विद्म हं म हा नि त्या य धी म हं न न्नो दे वी यु चा द या न ॥ त्व नि क याः
वा गी श्व ना य विद्म हं द य ग्री वा य धी म हं न न्नो ह म यु चा द या न ॥ रु द्र ग्री व स्य
त्रै वा गी श्व यो विद्म हं को वा म भ्यु ग्री धी म हं न न्नो म ह्नि यु चा द या न ॥ बाल के न वी
म हा दे वी विद्म हं द ग म्थे धी म हं न न्नो दे वी यु चा द या न ॥ द ग म्थिः
श्रीं न न त्का ला विद्म हं द ग म्थि दे वी धी म हं न न्नो म ह्नि यु चा द या न ॥ न न त्का लाः

महालक्ष्मीविद्महे महाश्रिये धीमहि गन्तव्यः श्रीः यथा दद्यात् ॥ लक्ष्म्याः
 वेभावता विद्महे कृष्णमध्वर्युधे धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ इन्द्रमस्ताथाः
 कालिकायै विद्महे भ्रमभनवासिन्त्ये धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ भ्रमभनवासाः
 गानाथै विद्महे महाश्रिये धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ गानाथोः
 वेकत्रिकायै विद्महे कलदीयाय धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ कत्रिकाया
 उयचध्वर्युधे विद्महे दुर्गादेव धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ उगचध्वर्युधे
 सिद्धिलक्ष्मीविद्महे नवृत्यायै धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ सिद्धिलक्ष्मीः
 दासनध्वर्युधे विद्महे सीतावत्सलाय धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ नामस्यः
 नृत्यनवायै विद्महे महादेवाय धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ भिवत्सा

चण्डभयविद्महे चण्डभयत्राय धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ चण्डभय
 गत्युनवायै विद्महे वक्रकुण्डभयध्वर्युधे धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ गण्डभयः
 दक्षिणमूर्त्यै विद्महे ध्यानस्वये धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ दक्षिणमूर्त्यै
 • महामातृ विद्महे कालसंकर्यध्वर्युधे धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ मुह्यकाल्याः
 • नृपिपुनादवी विद्महे क्रीकामभ्वनी धीमहि सो गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ निष्प्राद
 उगन्तव्यो यै विद्महे महाशक्त्याय धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ तर्थास्य
 विष्णुनवायै विद्महे नानाचक्षुध्वर्युधे धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ विष्णुः
 वासुदेवायै विद्महे पुन्रथा रुमाय धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ वासुदेवस्य
 वैलोक्यभाहनायै विद्महे स्मनाय धीमहि गन्तव्यो यथा दद्यात् ॥ विष्णुः

कृष्णाय विद्महे दामोदनाय धीमहि न नो विष्णुः पुत्रो दद्यात् ॥ एतच्छालस्य
 तन्महे श्मय विद्महे वाग्विष्णुश्चाय धीमहि न नो भिवः पुत्रो दद्यात् ॥ भिवस्म
 ॥ अमुं नो ध्वनय विद्महे मृत्सृज्याय धीमहि न नो नृपुत्रो दद्यात् ॥ नृपुत्रस्य
 तन्महे श्मय विद्महे महादेवाय धीमहि न नो नृद्वयत्रो दद्यात् ॥ महादेवस्य
 भिरयानां अय विद्महे स्ववृन्दाय धीमहि न नो नृद्वयत्रो दद्यात् ॥ अधोगस्य
 नृने श्मय विद्महे सामदेवाय धीमहि न नो दमनपुत्रो दद्यात् ॥ दमनस्य
 वैश्वानराय विद्महे नृने काचित्ताय धीमहि न नो वक्रिपुत्रो दद्यात् ॥ अरुं
 नृकडोठ विद्महे विकटदंष्ट्राय धीमहि न नो नृसाय पुत्रो दद्यात् ॥ नृकडोठ्याः
 सरुमुक्तिगमज विद्महे कृतात्मनाय धीमहि न नः सत्यपुत्रो दद्यात् ॥ सा सत्यस्य
 लस्केनाय विद्महे नृने कि न एभय धीमहि न नः सैश्वर्यो दद्यात् ॥ सैश्वर्यस्य

[illegible]

बुद्धक देवाय विप्र हं देव्यं न काय धीमहि न नो नामः प्र वा दयात् ॥ यः
 काम दे वा य विप्र हं देव्यं वा न धीमहि न नो नामः प्र वा दयात् ॥ काम
 कार्त्तव्यो य विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ जइ
 महा माया य विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ महा माया
 भीम व ल्य राय विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 पुं लमयी ज न व ल्य राय विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 नो ना य ल्य विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 दक्षिण मय विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 धुं का ल न गणी विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 धुं विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम

नामः प्र वा दयात्

पुं न न म हं ग म य विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 महि त न्ना मि व पु वा द यात् ॥ सदा विव स्य
 हं स हं सा य विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 त न्ना भो क पु वा द यात् ॥ हं स स्य ॥
 क क्क टा य विप्र हं देव्यं न नो नामः प्र वा दयात् ॥ नाम
 न्ना भो क पु वा द यात् ॥ क क्क ट स्य ॥

पुं ग नो अ स्यो व धी नी
 ग नो व न स्य ती नी ग नो
 वि प्र स्य न्न त स्या जे ग नो
 अपा म सि स्वा दा ॥ राम
 स का मि म ना सि स धी ल
 त स थ व द वा वा व ॥

[illegible]

विष्णु ॥ चन्दन गिलकं शिः
 न्दना मोहनं ॥ अ क नि व द नं
 चक्राया न ॥ च द द्यो ग ॥ ३० ॥
 ज वि ष दे ति ॥ याः रु लि नी ति
 ॥ पु न स्मि न्ना च म्य स्तु र्था य चि
 ॥ अ गि ल मा ध व स्य नि त्य पू जां
 क र्त्तु स्तु र्था या धा न मः ॥ पु
 न् स स्म र्था या धा न म न्या स
 च क र्त्ता म र्वा च चि सं पू र्णा
 स्तु पू जां व र्ता नः द्वा वा च न क
 र्त्ता ॥ अ धा व ग क्का दि ॥ ग र
 ज स ना य न मः ॥ आ नं ॥ वा
 भ य स्य स न स्व ती रा ग व ती त
 श्री रु धा दा कि ॥ धा या ॥ धा
 व क ग स र्ग र्वा क म लं ना
 ग वि चू ण म धिः ॥ व द्वा य
 म म हा व लि पु ण व लीः स
 धा गि ल मा ध व रा य या द्यं न मः
 अ र्च न मः ॥ स्ना नं न मः ॥ अ

वलि

चमनीयं नमः ॥ चन्दनं ॥ सि
 न्दनं ॥ पुष्पं ॥ अ क गं ॥
 धूयं ॥ दीयं ॥ नै व द्यं ॥ नै
 कौ ॥ नै व क य द्वा स ता य न
 मः ॥ द्वा ॥ स र्था च क र्त्ता नि
 यां ज ॥ लि ॥ अ जं ॥ ग न
 सं पू र्ण ॥ ५५ न र्था नि म्ब डां द
 भ य न ॥ च रुः स्व ति य चः
 पं च ति ॥ ३० ॥ धू व सि ॥ धू यं
 ३० ॥ क र्त्ता सि ॥ दी यं ॥ ३० ॥ अ न
 य न ॥ नै व द्य ॥ ३० ॥ म ना क ति
 ॥ य ति ष्ठा ॥ धू य दी या दी न्म क
 ल्य ॥ क पः ॥ १०५ ॥ स्ना नं वा
 व तिः पू जां क र्त्ता पु नः द
 वं पु र्ण म्य ॥ व लि वि स र्त्त न
 व लि पु र्ण म्य ॥ व न ॥ धा द क
 पुष्पं न य न् ॥ ॥ ३० ॥ ति ति
 ल मा ध व स्य नि त्य पू जा य द्य
 ति सं पू र्ण ॥ ३३ ॥ क र्त्ता न् ॥

वलि



